

পাট ও সমবর্গীয় তন্তু ফসল চাষিদের জন্য কৃষি পরামর্শ প্রকাশনা

ভা.কৃ.অনু.প- ক্রিজাফ, নীলগঞ্জ, ব্যারাকপুর

৬-২০ জানুয়ারী, ২০২২ (সংস্করণ সংখ্যাঃ ০১/২০২২)



ভা.কৃ.অ.প. -কেন্দ্রীয় পটসন এবং সমবর্গীয় রেশা অনুসন্ধান সংস্থান

ICAR-Central Research Institute for Jute and Allied Fibers

An ISO 9001: 2015 Certified Institute

Barrackpore, Kolkata-700120, West Bengal

www.icar.crijaf.gov.in



पाट ओ सहयोगी फसल उतुपादनकारी चाषिदेर जन्य कृषि-परामर्श
७-२० जानुयारी, २०२२

I. पाट उतुपादनकारी राज्याणुलिर एइ समयेर सञ्जाव्य आवहाओयार परिस्थिति

राज्या/ कृषि-जलवायु अणुखल/ जेला	आवहाओयार पूर्वाभास
गाङ्गेय पश्चिमवङ्ग मुर्शिदाबाद, नदिया, हगली, हाओडा, उतुतर २४ परगना, पूर्व बर्धमान, पश्चिम बर्धमान, दक्षिण २४ परगना, बाँकुडा, वीरभूम हिमालय सन्निहित पश्चिमवङ्ग	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २४-२८ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा १०-१५ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
दार्जिलिङ, कोचबिहार, आलिपुरदुयार, जलपाईणुडि, उतुतर दिनाजपुर, दक्षिण दिनाजपुर, मालदा आसामः मध्य ब्रह्मपुत्र उतुपत्या क्सेत्र	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। एइ अणुखले सर्वोच्च तापमात्रा २३-२९ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा १०-१२ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
मरिगाँओ, नओगाँओ	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २४-२७ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा ११-१३ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
आसामः निम्न ब्रह्मपुत्र उतुपत्या क्सेत्र गोयालपाडा, धुवडि, कोकडावाड, बङ्गईगाँओ, बरपेटा, नलवाडि, कामरूप, बाङ्गा, चिराङ्ग	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २४-२७ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा ११-१२ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
बिहारः कृषि-जलवायु अणुखल २ (उतुतर-पूर्व अणुखल) पूर्णिगा, काटिहार, सहर्ष, सुपौल, माधेपुरा, खागारिया, आरारिया, किषाणगङ्ग	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २४-२७ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा १२-१५ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
उडिष्याः उतुतर-पूर्व तटीय समभूमि वालेश्वर, भद्रक, जाजपुर	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २७-२८ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा १२-१४ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।
उडिष्याः उतुतर-पूर्व ओ दक्षिण-पूर्व समतल अणुखल केन्द्रपाडा, खुर्दा, जगत्सिंहपुर, पुरी, नयागड, कटक (आंशिक) एवंग गङ्गाम (आंशिक)	आगामी ७-९ जानुयारी वृष्टिर् सञ्जावना नेइ। सर्वोच्च तापमात्रा २९-२९ डिग्रि एवंग सर्वनिम्न तापमात्रा १३-१५ डिग्रि सेन्टिग्रेडेर् मतो थाकवे।

तथ्या सूत्रः भारतीय आवहाओया विभाग (<https://mausam.imd.gov.in> एवंग www.weather.com)

II. सहयोगी फसलेर जल्य कृषि परामर्श

क) पाट

पाटबीज फसलेर जल्य कृषि परामर्श

■ पश्चिमबङ्गेर पाटबीज फसलेर अङ्गल - पुरूलिया, बाँकुड़ा, पश्चिम मेदिनिपुरेर पश्चिमाङ्गल एवं वीरडूम।

❖ उँचु जमिते येखाने जुलाई मासेर द्वितीय पक्षे पाटबीज लागानो ह्येखिल, सेखाने फसल काटा, बाड़ाई, शुक्रानो इत्यादि सम्पूर्ण ह्येखे। बीजेर नमुना संग्रह ह्ये गेले, बीजेर गुनगतमानेर शंसा पत्रेर जल्य अपेक्षा करते हवे। बीज शुक्रानो एवं शीतल स्थाने काठेर पाटातनेर उपर राखते हवे बीजेर निर्दिष्ट परिचय याते संरक्षित ह्ये सेदिके नजर दिते हवे। ईदुरेर आक्रमण थेके बीज बाँचाते जिक्क सालफाईड, ब्रोमाडिओलोन, ओयारफारिन एवं स्प्रिचनिन प्रयोग करते हवे।

❖ माबारि जमिते, येखाने आगस्ट ओ सेप्टेम्बर मासेर प्रथम सप्ताहे बीज लागानो ह्येखिल, सेई बीज-फसल काटते हवे, ओ माड़ाई करते हवे। बीज बाड़ाई करा ओ प्राथमिक परिष्कार करार समय देखते हवे याते बीजे रसेर (जलेर) परिमान शतकरा ९ भागेर बेशि ना ह्ये। मोट उँपेपादित बीजेर परिमान बुबे, हाओया दिये वा बीज प्रक्रियाकरण मेशिनेर द्वारा बीज प्रक्रियाकरण करे निते हवे। विभिन्न धरनेर मयला येमन, माटिरि टेलो, बालि, पाथरेर टुकरो, भाङा डाल-पाला ओ बीजशुँटिरि खोसा इत्यादि बेखे फेले दिते हवे। प्रक्रियाकरणेर शेष धापे बीज शुक्रानो ओ अपेष्काकृत ठाँडा जयगाय राखते हवे। बीज प्रक्रियाकरणेर समय देखते हवे याते विभिन्न जातेर बीज मिशे ना यय। बीज शंसितकारी आधिकारिकेर सङ्गे योगायोग करे बीजेर नमुना संग्रहेर व्यवस्था करते हवे।



(क) बीज प्रक्रियाकरण



(ख) भर काजे लागिये बीज आलागा करार मेशिने प्रक्रियाकरण



(ग) रोदे बीज शुक्रानो

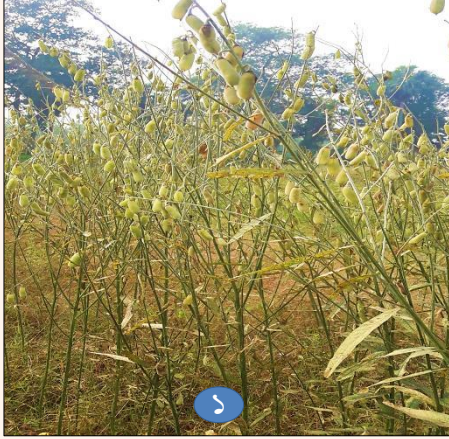


पाट बीज फसल

খ) শগপাট

শগপাট বীজ ফসলের জন্য করণীয়

- ❖ যদি বৃষ্টি না হয় ও মাটিতে জলের (রসের) অভাব লক্ষ্য করা যায়, তবে পুষ্ট বীজ পাবার জন্য লাগানো ফসলে একবার জলসেচ দেবার পরামর্শ দেওয়া হয়।
- ❖ লাগানোর ১২০-১৪০ দিন পর যখন শুকনো বীজ নাড়ালে শব্দ হবে, তখন কাস্তে দিয়ে বীজ ফসল কাটতে হবে। কাটার পরে ট্রাক্টর দিয়ে বা শক্ত মেঝেতে পিটিয়ে বীজ বের করতে হবে। ঝাড়াই ও হাওয়া দিয়ে পরিষ্কার করার পর বিঝা গুদামজাত করার আগে দেখতে হবে যাতে বীজে রসের পরিমাণ শতকতরা ১০ ভাগের বেশি হবে না।
- ❖ শূঁটিছিদ্রকারী পোকাকার আক্রমণ বিষয়ে চাষিরা সতর্ক হবেন। যদি বেশি ক্ষতি লক্ষ্য করা যায়, তবে নিম্ন তেল ৩-৪ মিলিলিটার বা ক্লোরপাইরিফস (২০ ইসি) ২ মিলিলিটার প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে স্প্রে করতে হবে। বীজে ছত্রাক আক্রমণ ঠেকাতে, শূঁটি পোকাকার আগে বীজ ফসলে কার্বেন্ডাজিম (৫০ ডব্লিউ পি) শতকরা ০.২ শতাংশ স্প্রে করতে হবে।
- ❖ কখনো কখনো আলের ধারের গাছগুলি হাওয়ার নুয়ে পড়তে পারে; এরকম হতে থাকলে, কাছাকাছি কয়েকটি করে গাছ এক সঙ্গে নিয়ে বেঁধে দিতে হবে, ফলে গাছগুলি সোজা থাকবে।



(১) শূঁটি পোকাকার অবস্থা; (২ এবং ৩) দেরিতে লাগানো ফসলে শূঁটি ধরা অবস্থা; (৪) শূঁটি ছিদ্রকারী কীট থেকে বাঁচতে স্প্রে করা; (৫) বীজ ফসল কাটার অবস্থায়, (৬) ভাইরাস/ পলিপ্লাসমা রোগাক্রান্ত - এই সব গাছ তুলে নষ্ট করে ফেলতে হবে



(ग) फ्लॉक्स
(तन्त्र मसिना)



ভূমিকা: ফ্লোক্স বা তন্ত্র মসিনার (লিনাক্স উসিট্যাটিসিমাম এল.) আঁশ হালকা হলে দে রংয়ের, ৭০ শতাংশ সেলুলোজ সমৃদ্ধ, তাপ রোধী, অ্যালার্জি হয় না, শরীরে স্থির তড়িৎ উৎপাদন করে না ও ব্যাকটেরিয়ার বৃদ্ধিতে বাধা দেয়। এই তন্ত্র চাষের জন্য ৫০-১০০ ডিগ্রি ফারেনহাইট তাপমাত্রা, বেশি বৃষ্টি ও তুষারপাত না হওয়া দোয়াস মাটি অঞ্চল নির্বাচিত করা প্রয়োজন। এমন আদর্শ আবহাওয়া ও মাটি - হিমালয় সন্নিহিত অঞ্চলের জম্মু ও কাশ্মীর, হিমাচল প্রদেশ, উত্তরাখন্ড, উত্তর প্রদেশের উত্তরাঞ্চল, পশ্চিমবঙ্গের উত্তরাঞ্চল ও পূর্ব-ভারতের বেশ কয়েকটি রাজ্যে পাওয়া যায়। ভারতের এই সব অঞ্চলে ফ্লোক্স চাষের আদর্শ মাটি ও জলবায়ু থাকা স্বত্বেও, ফ্লোক্স চাষ বিশেষ প্রসার লাভ করেনি। এর প্রধান কারণগুলি হল - নির্দিষ্ট অঞ্চলের জন্য উচ্চ-ফলনশীল জাত ও বিজ্ঞানসম্মত উৎপাদন প্রযুক্তির অভাব।

- ❖ যারা নভেম্বরের মাঝামাঝি বীজ লাগানো সম্পূর্ণ করেছেন, তারা বীজ লাগানোর ৬৫ দিন পর জল সেচ দেবেন। জল সেচ দেওয়ার পর, বাকি ৩০ কিলো নাইট্রোজেন (অর্থাৎ ৬৫ কিলো ইউরিয়া) সার চাপান সার হিসাবে দিতে হবে। যে সব চাষিরা নভেম্বরের মাঝামাঝি ফসল লাগিয়েছেন, তারা গোড়া পচা বা ফুজারিয়াম ঘটিত ঢলে পড়া রোগ বিষয়ে সতর্ক থাকবেন। যদি বেশি আক্রমণ লক্ষ্য করা যায়, তবে জমির যে যে অঞ্চলে রোগের আক্রমণ হয়েছে, সেখানে থেকে যাতে সেচের জলের সঙ্গে রোগ না চলে যায় তা খেয়াল রাখতে হবে।
- ❖ যারা নভেম্বরের মাঝামাঝি বীজ লাগানো সম্পূর্ণ করেছেন, তারা বীজ লাগানোর ৪০-৪৫ দিন পর হাত নিড়ানি দিয়ে দ্বিতীয় বারের আগাছা দমন করবেন। এসময়ে চারা পাতলা করে - চারা চারা থেকে চারার দূরত্ব ১-২ সেন্টিমিটার করে দিতে হবে।
- ❖ কিছু অঞ্চলে ডগার পাতাগুলি ছোট হয়ে ফাইলোডি রোগ হতে পারে। এই লক্ষণ থাকলে গাছ তুলে ফেলে দিতে হবে।



গোড়া পচা বা ফুজারিয়াম ঘটিত ঢলে পড়া রোগ



পাতা ছোট হয়ে ফাইলোডি রোগ



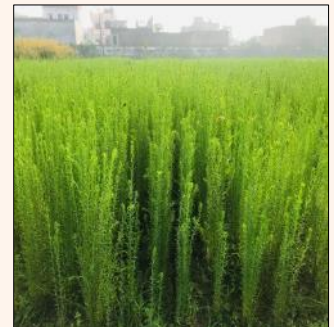
হালকা জলসেচ দেওয়া



দ্বিতীয়বার আগাছা নিয়ন্ত্রণ ও চারা পাতলা করা



৫০-৫৫ দিন বয়সের গাছ



ख) सिसाल

भूमिका: सिसाल (एगोड सिसालाना) प्राय-वहवर्षजीवी पाता থেকে तন্ত উৎপাদনকারী মরুজাতীয় উদ্ভিদ। সিসালের তন্ত থেকে তৈরী দড়ি বিভিন্ন ধরনের জলযান (জাহাজ, লঞ্চ, বড় নৌকা ইত্যাদি) বাঁধার কাজে ব্যবহৃত হয়। ব্রাজিল সিসাল তন্ত উৎপাদনে ও রপ্তানিতে প্রথম স্থান অধিকার করে, আর চীন সব থেকে বেশি সিসাল আমদানি করে। ভারতের উড়িষ্যা, তেলঙ্গানা, কর্ণাটক, মহারাষ্ট্র ও পশ্চিমবঙ্গের মরুপ্রায় অঞ্চলে সিসাল চাষ হয়ে থাকে। ভারতে সিসালের মোট জমির পরিমাণ প্রায় ৭৭৭০ হেক্টর, যার মধ্যে ৪৮১৬ হেক্টর সিসাল, মাটি ও জল সংরক্ষণের জন্য ব্যবহৃত হয়। ভারতে সিসালের হেক্টর প্রতি গড় উৎপাদন অনেকটাই কম (৬০০-৮০০ কেজি), তবে সঠিক পদ্ধতি অনুসরণ করে চাষ করতে পারলে হেক্টর প্রতি উৎপাদন অনেকটাই বাড়ানো সম্ভব (২০০০-২৫০০ কেজি)। এই ফসলে জলের প্রয়োজন অনেক কম এবং মধ্যভারতের মালভূমি অঞ্চলের মাটি ও আবহাওয়া (সর্বোচ্চ তাপমাত্রা ৪০-৪৫ ডিগ্রি, বৃষ্টিপাত ৬০-১০০ সেমি) সিসালের জন্য উপযোগী, ও গ্রামীণ অঞ্চলের আর্থিক ও সামাজিক উন্নয়ণে বিশেষ সহায়ক হতে পারে। সিসাল চাষ এই অঞ্চলের উপজাতি মানুষদের জীবিকা সরাসরি ও কর্মসংস্থানের মাধ্যমে উন্নয়ণ করতে পারে। এছাড়াও সিসাল বৃষ্টির জলের বয়ে যাওয়া অপচয় ৩৫ শতাংশ ও ভূমিক্ষয় ৬২ শতাংশ কম করতে সক্ষম।

বুলবিল সংগ্রহ: সিসাল গাছের ফুলের দন্ড (যাকে পোল বলা হয়) বের হবার পর সিসালের বৃদ্ধি বন্ধ হয়ে যায়। প্রত্যেকটি পোলে প্রায় ২০০-৫০০ টি ছোট ছোট বুলবিল হয়, এদের প্রত্যেকটিতে ৪-৬ টি ক্ষুদ্র পাতা থাকে। এই বুলবিলগুলি সংগ্রহ করে প্রাথমিক নার্সারিতে লাগানো হয়।

প্রাথমিক নার্সারির প্রস্তুতি: সংগৃহীত বুলবিলগুলি অতি যত্নের সঙ্গে প্রাথমিক নার্সারিতে লাগানো হয়। এই নার্সারির ১ মিটার চওড়া কিছুটা উঁচু করা জমিতে, বুলবিলগুলি ১০-৭ সেমি. দূরে দূরে লাগানো হয়। নার্সারির জমির মাটিতে খামার সারের পাশাপাশি রাসায়নিক সার এনঃপিঃকে - ৩০ঃ১৫ঃ৩০ কিলো প্রতি হেক্টরে হিসাবে প্রয়োগ করতে হবে। বুলবিলগুলি প্রথম দিকে আগাছার সঙ্গে প্রতিযোগিতায় পেলে ওঠে না, এবং জলের অভাব হতে পারে, তাই আগাছা দমন করতে হবে ও প্রয়োজনে জল সেচের ও অতিরিক্ত জল নিকাশির ব্যবস্থা করতে হবে।

মাধ্যমিক নার্সারির পরিচর্যা

➤ নার্সারির জল নিকাশি ব্যবস্থা করবেন ও নার্সারি আগাছা মুক্ত রাখবেন। সুস্থ সাকার পাবার জন্য মেটালাক্সিল ২৫ শতাংশ এবং ম্যানকোজেব ৭২ শতাংশ মিশ্রণ ০.২৫ শতাংশ হারে স্প্রে করে অন্তরবর্তী পরিচর্যা করতে হবে। উদ্ভিদ খাদ্যোপাদান যোগান ও আগাছা দমনের জন্য সিসাল কম্পোষ্ট ব্যবহার করা যেতে পারে। যে সব চাষীদের মাধ্যমিক নার্সারি তৈরী বাকি আছে, তারা প্রাথমিক নার্সারিতে বড় করা বুলবিল, মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫০-২৫ সেমি দূরত্বে লাগাবেন। বুলবিল লাগানোর আগে পুরানো পাতা ও শিকড় কেটে বাদ দিয়ে ২০ মিনিট ম্যানকোজেব (৬৪ শতাংশ) ও মেটালাক্সিল (৮ শতাংশ) মিশ্রণ ২.৫ গ্রাম প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে। এক হেক্টর নার্সারিতে ৮০,০০০ সাকার লাগানো যায় তবে শেষ পর্যন্ত ৭২,০০০-৭৬,০০০ সাকার বাঁচে। ধরে নেওয়া হয় যে মাধ্যমিক নার্সারিতে ৫-১০ শতাংশ চারা মরতে পারে।

সিসালের মূল জমি থেকে সাকার সংগ্রহ

➤ প্রাথমিক ও মাধ্যমিক নার্সারির মাধ্যমে বুলবিল থেকে সাকার তৈরী পাশাপাশি, আগে থেকে লাগানো সিসালের মূল পুরানো জমি থেকে সাকার সংগ্রহ করা যাবে। সাধারণত একটি সিসাল গাছ থেকে বছরে ২-৩ টি সাকার পাওয়া যায়। বর্ষার শুরুতে এইসব উপযুক্ত সাকার তুলে - সরাসরি নতুন মূল জমিতে লাগানো যাবে। সাকার লাগানোর আগে পুরানো শিকড় ছেঁটে ফেলেতে হবে ও শুকিয়ে যাওয়া পাতা ফেলে দিতে হবে। তবে খেয়াল রাখতে হবে যে শিকড় ছেঁটে ফেলার সময়, সাকারের গোড়ার অঞ্চল যেন ক্ষতিগ্রস্ত না হয়।



(ক) সিসাল পাতা কাটা, (খ) পাতা ছাড়ানো, (গ) প্রাথমিক নার্সারিতে অন্তরবর্তী পরিচর্যা, আগাছা নিয়ন্ত্রণ, (ঘ) জেরা রোগ নিয়ন্ত্রণের জন্য কপার অক্সিক্লোরাইড ২-৩ গ্রাম/ প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ

नतुन सिसाल खेतेर परिचर्या

- एक-दुई बहर वयसेर सिसाल फ्लेते आगाछा नियस्त्रणेर व्यवस्था करते हवे, याते सिसालेर जल ओ खादयेर जन्य आगाछार सङ्गे प्रतियोगिता कमे याय। जेब्रा रोगेर प्राथमिक लक्षण देखा गेले - कपार अक्लिक्कोराइड ३ ग्राम प्रति लिटारे वा म्यानकोजेव ७४ शतांश ओ मेटालाक्लिज ८ शतांश मिश्रण २.५ ग्राम प्रति लिटार जले मिशिये प्रयोग करते हवे। सठिक बृद्धि ओ फलनेर जन्य हेक्टेर प्रति २ टन सिसाल कम्पोस्ट एवंग ७०:३०:७० किलो एन.पि.के. सार प्रयोग करते हवे। प्रथम बहर, सिसाल गाछेर चारधारे गोल करे सामान्य गर्त करे सार प्रयोग करते हवे।

मूल जमिते सिसाल लागाने

- पुरानो मूलजमिर सिसाल थेके सरासरि तोला सिसाल साकार ओ माध्यमिक नार्सारि थेके पाओया सिसाल साकार व्यवहार करे सिसालेर नतुन मूल जमिते चारा लागते पारले भालो हय। माध्यमिक नार्सारिते बड़ करा साकार, पुरानो पाता ओ शिकड़ हेँटे मूल जमिते लागते हवे। लागानेर आगे म्यानकोजेव ७४ शतांश ओ मेटालाक्लिज ८ शतांश - २.५ ग्राम प्रति लिटार जले मिशिये २० मिनिटेर जन्य साकारेर शिकड़ अखल धुये निते हवे। साकार पिटेर गर्तेर माखखाने सूचालो काठिर साहाय्य निये लागते हवे।
- साकारेर आकार (साइज) ३० सेमि लम्बा, २५० ग्राम ओजन ओ ५६ टि पाता विशिष्ट हते हवे। ये सब साकारे रोग-पोकार वा अन्य कोनो प्रकार चापेर (खादयेर वा जलेर अभाव युक्त) लक्षण आछे, सेगुलि बान्द दिते हवे।
- सिसाल गाछेर द्रुत बृद्धि जन्य हेक्टेर प्रति ५ टन सिसाल कम्पोस्ट, ७० केजि नाइट्रोजेन, ३० केजि फसफेट, ७० केजि पाटाश दिते हवे। नाइट्रोजेन सार २ बारे दिते हवे - मोट परिमानेर अर्धेक वर्षा शुरु आगे, आर बाकि अर्धेक वर्षा चले याबार पर।
- ये सब चायिरा एखनो जमि निर्वाचन करेननि, तादेर जल ना दाँडाय एमन जमि निर्वाचन करते हवे याते कमपफे १५ सेमि गभीर माटि थाकते हवे। टालु जमिते सिसाल चायेर फ्लेदे, पुरो जमि चाय देवार दरकार नैह।
- आगाछा, बोपवाड़ परिक्षार करे १ घन फुटेर पिटि ३.५ मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे बानाते हवे, एते ४,५०० टि पिटि हवे येखाने वर्षार शुरुते दुई सारि (डबल रो) पद्धतिते सिसाल लागते हवे। तवे प्रतिकूलपरिस्थितिते ३.० मिटार — १ मिटार-१मिटार दूरे दूरे पिटि करे, प्रति हेक्टेरे ५,००० टि साकार लागानो यावे।
- सिसालेर जन्य तैरी करा पिटि, माटि ओ सिसाल कम्पोस्ट दिये भर्ति करते हवे, याते माटि बुरबुरे थाके। अन्न माटि जमिते हेक्टेर प्रति २.५ टन हारे चून प्रयोग करते हवे। पिटेर गर्तेर मध्ये एमन भावे माटि पूर्ण करते हवे याते १-२ इঞ্চि ऊँचू हये थाके, एते सिसाल साकार सहजे दाँडाते पारवे।
- माटि रक्ष्य रोध करते, सिसाल साकार जमिर स्वाभाविक टालेर आड़ाआड़ी ओ समोमति रेखा बराबर लागते हवे। साकार सङ्ग्रह ४५ दिनेर मध्ये जमिते साकार लागानो सम्पूर्ण करते हवे। लागानेर परे हेक्टेर प्रति कमपफे १०० टि अतिरिक्त साकार आलादा करे राखते हवे, याते प्रयोजने कोनो कारणे खालि यये याओया जायगाय आबार सिसाल चारा लागिजे जमिते सिसाल चारार आदर्श संख्या बजाय राखा याय।
- पुरानो मूलजमिर सिसाल थेके सरासरि तोला सिसाल साकारेर परिवर्ते, माध्यमिक नार्सारि थेके पाओया सिसाल साकार व्यवहार करे सिसालेर नतुन मूल जमिते चारा लागते पारले भालो हय।

सिसाल पाता काटा - सिसाल गाछेर वयस तिन बहर हले सिसाल पाता काटा शुरु करते हवे। प्रथमवार पाता काटार समय गाछे १७ टि पाता रेखे बाकि पातागुलि केटे फेलते हवे। द्वितीय बहर थेके गाछे १२ टि पाता रेखे बाकि पाता केटे नेओया यावे। बिकेलेर दिके सिसाल पाता काटते हवे एवंग चेष्टा करते हवे याते एकई दिने पाता थेके आँश छाड़ानो हये याय। पाता काटार परे, रोगेर हात थेके सिसाल बाँचाते, कपार अक्लिक्कोराइड २-३ ग्राम/प्रति लिटार जले मिशिये स्प्रे करते हवे।

अतिरिक्त आयेर जन्य सिसालेर सङ्गे अस्तबती फसलेर चाय

- सिसालेर सङ्गे लागानो कुल गाछ थेके फल पाड़ते हवे। शीत मरशुमेर सुयोगे सिसाल पाता काटा ओ आँश छाड़ते हवे।
- सिसालेर सङ्गे लागानो टमेटो फसले परिचर्या करते हवे। ऋति एड़ाते टमेटो तोलार परे, सिसाल पाता काटते हवे।
- सिसालेर सङ्गे गाजर चाय करे बेशि लाड हते पारे। गाजरेर परिचर्या करते हवे एवंग जीबनदायी सेचदिते हवे। सिसाल पाता काटा ओ तस्तु बेर करा येते पारे।



सिसालेर जमिते अस्तबती फसल (१) कुल, (२) टमेटो, (३) गाजर

सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

खरा प्रबन आदिवासी अधुषित अषधले सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था लाडजनकभावे करा येते पारे। एते चाषिर आय वाडवे, कर्मसंस्थान हवे ओ दीर्घमेयादि कृषि व्यवस्था पाओया यावे। एही व्यवस्थाय स्थानीय भावे पाओया विभिन्न धरनेर उँसके काजे लागिणे ओ फसलेर अवशिष्टांश व्यवहार करे - यथेष्ठ आयेर संस्थान हवे। एही सिसाल भित्तिक खामार व्यवस्थाय फसलेर पाशापाशि विभिन्न प्राणी पालनेर व्यवस्था रेखे एही सुसंहत खामार व्यवस्था अर्थनैतिक भावे सफल ओ सार्थक भावे रूपायित हते पारे।

- १। एही खामारे १०० टि विभिन्न जातेर मुरगि येमन - बनराजा, रेड रुस्टार, कडकनाथ पालन करे ८,०००-१०,००० टाका निट लाड हते पारे।
- २। चाषिरा एही खामार व्यवस्थाय दुँटि गरू पालन करे प्रति बहर २५,००० टाका अतिरिक्त लाड करते पारेन। सिसालेर सडे अश्वरवती फसल हिसावे गोखाद्य चाष, एही गरूर खाओयार जन्य योगान देओया यावे।
- ३। एही व्यवस्थाय १० टि हागल पालन करे प्रति बहर आरो १२,०००-१५,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे।
- ४। सिसालेर सडे दुँ सारिर माखाखाने ये उँचू जमिर धान (कादा ना करे शुधु चाष दिये) फलानो हवे, तार खड व्यवहार करे माशरुम चाषेर माध्यमे बहरे १२,००० टाका लाड हते पारे।
- ५। सिसाल चाषेर बर्ज ओ माशरुम तैरीर बर्ज व्यवहार करे भार्मिकम्पोस्ट तैरी करे व्यवहार करा यावे, एते माटिर स्वास्थ भालो थाकवे ओ बहरे १८,००० टाका अतिरिक्त लाड हवे।
- ६। सिसाल साधारनत टालु ओ उँचू जमिने लागानो हय - तौ एही अवस्थाय वृष्टिर जल धरे लाडजनकभावे व्यवहार करा यावे। येहेतु एही अषधले एमनितेही अपेष्काकृत कम वृष्टि हय, तौ वृष्टिर जल धरार व्यवस्था करे - ए जल दिये अन्यान्य भावेओ आय वृद्धि हते पारे। एक हेक्टर सिसालेर जमिर मात्र एक दशमांश एही जल धरार जन्य व्यवहृत हवे। एही जल धरार पुकुरेर माप हवे ३० मिटार-३० मिटार-१.८ मिटार, आर १.८ मिटार चओडा पाड हवे। एही पुकुरे जल धरे ये ये भावे व्यवहार करे लाडवान हओया यावे ता हलो -
 - सिसालेर सडे चाष करा अश्वरवती फसलेर संकटकालीन सेच एही पुकुरेर जल व्यवहार करे देओया यावे। एते एही सब फसलेर उँपदन ओ आय वाडवे।
 - एही जल व्यवहार करे सिसालेर आँश छाडानोर परे थोया यावे।
 - पुकुरेर पाडे विभिन्न उँचतार फसल येमन - पेपे, कला, नारकेल, सजने एवं अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति बहर १५,०००-२०,००० टाका आय हते पारे।
 - मिश्र माछ चाष पद्धतिने कातला, रुई, मृगेल चाष करे प्रति बहर १०,०००-१२,००० टाका आय हते पारे।
 - एही जले १०० टि हाँस पालन करे प्रति बहर प्राय ८००० टाका आतिरिक्त आय हते पारे।



उडिष्यार सखलपुर जेलार वामडाय सिसाल भित्तिक सुसंहत खामार व्यवस्था

रेमि



- ❖ এই ডিসেম্বর মাসে ঠান্ডার জন্য রেমি গাছের বৃদ্ধি খুব কম, তাই এই সময়ে রেমির যত্ন করতে হবে। ১৫-২০ দিন অন্তর ১-২ বার জল সেচ দিতে হবে যাতে রেমি ভালো ভাবে বাড়তে পারে।
- ❖ রোগের ও পোকাকার আক্রমণের মাত্রা বুঝে ০.০৪ শতাংশ ক্লোরপাইরিফস এবং ম্যানকোজেব ২.৫ মিলি বা প্রপিকোনাজোল ১ মিলি প্রতি লিটার জলে মিশিয়ে প্রয়োগ করতে হবে।
- ❖ ঘাস জাতীয় আগাছা কম করার জন্য প্রতি হেক্টরে ৪০ গ্রাম হিসাবে কুইজালোফপ ইথাইল আগাছানাশক ব্যবহার করতে হবে।
- ❖ রেমি ফসলের সঠিক বৃদ্ধির জন্য ও মাটির স্বাস্থ্য বজায় রাখার জন্য অজৈব সারের সঙ্গে জৈব সার (খামার সার বা রেমি কম্পোস্ট) প্রয়োগ করার সুপারিশ করা হয়।



রেমি প্ল্যান্টেশন



রেমি ফসল কাটা



রেমির আঁশ ছাড়ানো



রেমি কাটার পর জঙ্গল জিম চালিয়ে
আগাছা পরিষ্কার



বাছাই ক্ষমতাহীন রাসায়নিক
আগাছানাশক (নন-সিলেক্টিভ
হার্বিসাইড) প্রয়োগ



ছাড়ানো রেমি তন্তু (আঠা সহ)

जमिर् स्याभाविक स्थाने पाट पचानोर जलर सधुंय एवंग दीर्यमेयादि परिवेशबाह्य खामार व्यवस्था

- वृष्टिर् अनियमित वितरण, पाट पाचानोर जलर उपयुक्त सर्वसाधारणेर पुकुरेर अभाव, माथाप्रति कम जलर योगान, चाषेर खरच ओ कृषि श्रमिकेर मजुरि वृद्धि, पुकुर - नदी - नाला शुकिने याओया इत्यादि विवेचना करे देखा याय, चाषिरा पाट ओ मेस्ता पचानोते असुविधार समुधीन ह्छेन। कम जले एवंग सर्वसाधारणेर पुकुरेर मयला जले क्रमागत पाट पचानोर फले, पाटेर आँशेर मान खाराप ह्छे एवंग आनुर्जातिक बाजारे प्रतियोगिताय टिके थाकते पारहे ना।

वर्षा आसार आगेई पाट पचानोर पुकुर तैरी सम्पूर्ण करते हवे

- पाट काटा ओ पचानोर मरशुमे जलर अभाव दूर करार जलर - वर्षा शुरुर् आगेई जून मासे जमिर् कोनार दिके स्याभाविक निचू जायगाय ईह पाट पचानोर पुकुर तैरी करते हवे, येथाने मोट वृष्टिर् वये याओया ७०-८० शतांश वृष्टिर् जल (या १२००-२००० मिलिमिटांर मतो हय) जमा हवे ओ पाट एवंग पचानोर काजे लागवे। एर फले पाट ओ मेस्ता चाषे चाषिदर लाभ आरो बाडवे।

पुकुरेर माप एवंग एक एकर जमिर् पाट पचानोर जलर पचन पद्धति

- पुकुरेदर आकार हवे ८० फुट लम्बा, ७० फुट चओडा ओ ५ फुट गभीर। एक एकर जमिर् पाट वा मेस्ता ईह पुकुरे दु'वार जांग देओया यावे। पुकुरेर पाडू यथेष्ट चओडा (१.५-१.८ मिटांर) हवे, याते र्पेपे, कला ओ सज्जि लागानो याय। ईह खामार प्रणालि/ व्यवस्थाय पुकुर ओ तार पाडू निने मोट आयतन १८० वर्ग मिटांर हवे। चाषिरा यदि ईह खामार प्रणालिते आरो वेशि परिमाने जमि व्यवहारे इच्छुक, ताहले पुकुरेर माप ५० फुट-७० फुट-५ फुट हते पारे।
- पुकुरेर भितरर दिके १५०-७०० माइक्रनेर कृषिते व्यवहार योग्य पलिथिन दिने टेके दिते हवे याते पुकुरेर जल चुइये वा निचे चले गिये नष्ट ना हय।
- एकसङ्गे तिनटि जाक तैरी करते हवे एवंग एक एकटि जाके तिटि करे सुत थाकवे। पुकुरेर तलार माटि थेके जाक २०-७० सेन्टिमिटांर उपरे थाकवे एवंग जाकेर उपर २०-७० सेन्टिमिटांर जल थाकवे।

जमिंतेई तैरी पचन पुकुरेर सुविधा

- प्रचलित पद्धतिते पचानोर स्फेद्रे पाट केटे पचानोर पुकुरे वये निने याओयार खरच एकर प्रति ८०००-५००० टाका ईह पद्धतिते साश्रय हवे।
- प्रचलित पद्धतिते १८-२१ दिने पाट पचे; किन्तु ईह नतून पद्धतिते एकरे १८ केजि क्रुइजफ सोना व्यवहार करे १२-१५ दिने पाट पचे यावे। द्वितीय वार पचानोर समय क्रुइजफ सोना अर्धेक लागवे एवंग एते ८०० टाका खरच बाँचवे।
- पाट पचानोर जलर वृष्टिर् नतून धरा जल व्यवहार करले वा ई समय वृष्टि हले - धीरे वये चला जल पाओया यावे एवंग आँशेर गुनमान कमपक्के १-२ ग्रेड उन्नत हवे।

तैरी करा पुकुरे पाट ओ मेस्ता पचानो छाडाओ वृष्टिर् धरा जल आरो विभिन्न उपाये व्यवहार करा यावे -

- १। विभिन्न उच्चतार वागिचा फसल व्यवहार माध्यमे र्पेपे, कला, अन्यान्य सज्जि चाष करे प्रति ट्याक्के प्राय १०,०००-१२,००० टाका लाभ हवे।
- २। वायुते श्वास निते पारे एमन माह येमन - तिलापिया, मागुर, शिंशि माह चाष करे ५०-६० केजि माह पाओया येते पारे।
- ३। ईह व्यवस्थाय मोमाहि पालन करा यावे (प्रति ट्याक्के लाभ ९,००० टाका) एवंग एते बीज उपादने परागमिलने सुविधा हवे।
- ४। माशरुम चाष, भार्मिकम्पोस्ट तैरी करे आय हते पारे।
- ५। ईह पुकुरे प्राय ५० टि हाँस पालन करे ५,००० टाका अतिरिक्त आय हते पारे।
- ६। पाट पचानो जल, पाटेर सङ्गे फसलचक्रे लागानो सज्जि ओ अन्यान्य फसलर सेचेर जलर व्यवहार करा यावे एवंग प्रति एकरे ८,००० टाका अतिरिक्त लाभ हते पारे।

सुतरां जमिंते ईह पद्धतिते पुकुर वानिये, मात्र १,०००-१,२०० टाकार पाटेर क्षति करे, चाषिरा अनेक धरनेर फसल फलिये, प्राणी-मत्स-मोमाहि पालन करे प्राय ७०,००० टाका आय करते पारेन। छाडाओ ईह पद्धतिते चाषेर फले बहनेर खरच प्राय ८,०००-५,००० टाका बाँचवे। सेई सङ्गे ईह प्रयुक्ति, चाषबासे चरम आवहाओयार - येमन खरा, बन्या, घुर्षिबाडू इत्यादिर क्षतिकर प्रभाव कम करते सम्भम।

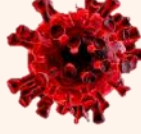
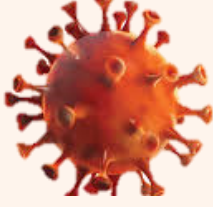


पाट ओ मेसुता चाषे जमिर स्वाभाविक स्थाने जलाधार भित्तिक परिवेशवाक्कव स्वनिर्भर खामार व्यवस्था

- ❖ पाट/ मेसुता पचानो
- ❖ माह चाष
- ❖ पाडे सज्जि चाष
- ❖ पुकुरेर धारे भार्मिकम्पोसुत तैरी

- ❖ हाँस पालन
- ❖ मोमाछि पालन
- ❖ फल वागिचा (पेँपे ओ कला)

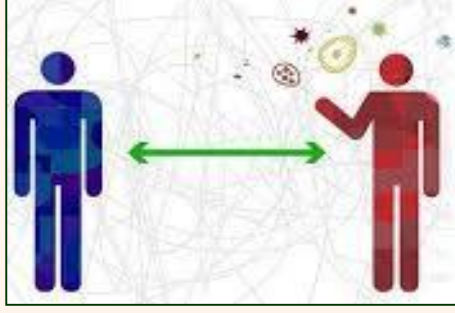
IV. कोरोना (COVID-19) भाईरसैर संकुरमण छडिडे पडा ठैकाते ये ये निरापत्रामूलक ओ प्रतिरोध व्यवस्था ग्रहन करते हवे एवं मेने चलते हवे



- 1। कुषकदेर चाषबासेर काजेर समय निरापत्रा व्यवस्था हिसावे एक जनेर थेके आरेक जनेर सामाजिक दुरतव्व बजाय राखते हवे। चाषिआ जमी चाष, बीज बपन, आगाछा नियत्रण, जलसेच देओया इत्यादि काजेर समय डाङ्गारि परामर्श मतो मुखोस (मास्क) परबेन, आर माणे माणे सावान-जल दिडे हात धोबेन।
- 2। यखन एकई कुषि यत्रपाति येमन - लाङ्गल, ट्राङ्कटर, पाओयार टिलार, बीज बपन यत्र, निडानि यत्र, जलसेचेर पासप अनेके मिले पर पर भागाभागी करे व्यवहार करबेन, तखन खेयाल राखते हवे एई यत्रपातिगुलि येन सठिकभावे परिस्कार करा हय। कुषि यत्रपातिर ये ये अंश बार बार हात दिडे स्पर्श करते हय, सेई अंशटा सावान जल दिडे धुडे निते हवे।
- 3। चाषेर काजेर फाँके अवसरेर समय, खावार खाओयार समय, बीज शोषनेर समय एवं सार नामानो वा तोलार समय - पर्याप्त सामाजिक दुरतव्व (कम पक्षे 3-8 फुट) बजाय राखते हवे।
- 4। यतोटा संभव, कुषि काजे परिचित लोकेदेरई काजे लागान। ভালोभावे खोज खबर निडेई सेई मजुर काजे लागते हवे, याते कोनो कोरोना भाईरस बाहक कुषिकाजे आपनार अण्गले चले आसते ना पारे।
- 5। बीज ओ सार परिचित दोकान थेके किनबेन एवं दोकान थेके फिरे आसार परेई सावान जल दिडे ভালोभावे हात धुडे नेबेन। बाजारे बीज, सार इत्यादि किनते यावार समय अवश्यई मुखोस (मास्क) परबेन।
- 6। कोभिड-19 भाईरस रोग संक्रांत जरुरि स्वास्थ परिसेवा विषये तथ्य जानार जन्य आपनार स्मार्ट मोबाईले 'आरोग्य सेतु' नामेर एप्लिकेशन सफ्टओयार व्यवहार करुन।



V. पाट कलेर (जूट मिल) कर्मचारिदर जन्य परामर्श



- पाट कल (जूट मिल) चालू राखार जन्य, पाट कलेर सीमानार मध्ये थाका कर्मचारिदर दिये छोटो छोटो ब्याचे, वारे वारे शिफ्ट करे काज चलाते हवे।
- पाट कलेर मध्ये आनेक जायगाय कलेर (जल) व्यवस्था करते हवे, याते कर्मचारिरी मावे मावे हात धुये निते पारैन। काज चलाकालीन अवस्थाय, कर्मचारिरी धूमपान करबेन ना।
- मिलेर शौचागार गुलि वार वार परिस्रार करते हवे, याते कर्मचारिरी रोगेर आक्रमणे ना पडेन।
- कर्मचारिदर, ग्लाउस, जूतो, मुख टाकार व्यवस्था एवंग अन्यान्य सुरक्षार जन्य परामर्श दिते हवे।
- मिलेर मध्येई, काजेर जायगा वार वार बदल करा येते पारे, याते कर्मचारिदर मध्ये पारामर्श मतो सामाजिक दूरत बजाय থাকे।
- ये सम कर्मचारिदर यन्त्रपातिर (मेशिनर) अनेर स्थाने वार वार हात दिते हय, तादर जन्य आलादा भावे हात धोयार वा स्यानिटाईज करार व्यवस्था राखते हवे। एछाडाओ मेशिनर ओई जायगागुलो वार वार सावान जल दिये परिस्रार करते हवे।
- वयस्क कर्मचारिदर अपेक्षकृत फाँका वा भिड कम जायगाय काज दिते हवे, याते तादर भाईरासेर संक्रमण ना हय।
- मिलेर कर्मचारिरी टिफिनर समय वा अवसरेर समय भिड करे एक जायगाय आसबेन ना एवंग ७-८ फुट दूरत बजाय रेखेई हात धोबेन।
- यदि कोनो मिल कर्मचारिरी ई धरनेर शारीरिक समस्या देखा यय, तवे तिनि अबिलखे मिलेर डाक्टर वा मिल मालिकेर सडे योगायोग करबेन।



आपनादर सवाइके सुस्थ्य ओ निरापद थाकार जन्य शुभेच्छा जानाई

धारणा ओ प्रकाशनाः

डः गौराङ्ग कर,

निर्देशक,

भा.कृ.अ.प - त्रिन्जाफ,

नीलगण्ज, ब्यारकपुर,

कोलकाता-९००१२१, पश्चिमबङ्ग

Acknowledgement: The Institute acknowledges the contribution of Chairman and Members of the Committee of Agro-advisory Services of ICAR-CRIJAF; Heads/ Incharges of Crop Production, Crop Improvement and Crop Protection division, In-charges of AINPNF and Extension section of ICAR-CRIJAF and other contributors of their division/section; In-charges of Regional Research Stations of ICAR-CRIJAF and their team; In-charge AKMU of ICAR-CRIJAF and his team for preparing this Agro-advisory.

[Issue No: 01/2022 (6-20 January, 2022)]